ISSN : 2347-8012
Peer Reviewed Research Journal

अर्द्धवार्षिक

नव सृजन

(साहित्यिक शोध पत्रिका)

अंक 9
जनवरी-जून
2022

प्रधान सम्पादक
डॉ. आशीष सिसोदिया

ISSN : 2347-8012
Peer Reviewed Research Journal

(अर्द्धवार्षिक)

नव सृजन

(साहित्यिक शोध पत्रिका)

प्रधान संपादक
डॉ. आशीष सिसोदिया

उप-संपादक
तरुण पालीवाल
डॉ. अर्चना जैन

सलाहकार मण्डल

1. प्रो. बी.एल. चौधरी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर
2. प्रो. नंद किशोर पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
3. प्रो. सीमा मलिक, आचार्य, अंग्रेजी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
4. प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी भवन, लखनऊ
5. डॉ. नरेंद्र मिश्र, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय, दिल्ली
6. डॉ. कमला जैन, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक एवं अनुसंधान अधिकारी, विद्यालय शिक्षा, राजस्थान

नव सृजन

आलेख का क्रम

1. प्रकृति के अप्रतिम चितेरे : पंत — 1
   - डॉ. नवीन नंदवाना
2. तट को खोजती हरिशंकर परसाई की शीला — 9
   - डॉ. नीतू परिहार
3. राजस्थान का संत साहित्य — 16
   - डॉ. आशीष सिसोदिया
4. छायावादी काव्य में बिंब सौंदर्य — 26
   - डॉ. नीता त्रिवेदी
5. भारतीय संस्कृति की अजेय परंपरा : राम-कृष्ण साहित्य — 33
   - तरुण पालीवाल
6. दादूपंथ के आदर्श गृहस्थी संत प्रयागदास बियाणी : साहित्य और कृतित्व — 39
   - वीरमाराम पटेल
7. अम्लघात - समाज के चेहरे पर एक अमिट कालिख — 45
   - राकेश कुमार शर्मा
8. फाइटर की डायरी — 49
   - रेखा खराड़ी
9. भारतीय संस्कृति में कृषि और किसान का महत्व — 57
   - प्रेम शंकर मीणा
10. मधु कांकरिया की कहानियों में नारी जीवन — 61
    - वर्षा सिखवाल
11. समकालीन हिंदी कविता का शिल्पगत वैशिष्ट्य — 66
    - गौरव शर्मा
12. साहित्य में करूण दृष्टि - किन्नर विमर्श — 74
    - रेणू वर्मा

छायावादी काव्य में बिम्ब सौन्दर्य

डॉ. नीता त्रिवेदी
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001

'छायावाद' भावबोध, स्वानुभूति और सौंदर्य प्रधान कल्पना की बहुमूल्य काव्य धरोहर है। प्रकृति और नारी के सौंदर्य, प्रेम, वैयक्तिकता, निराशा, विरह, समन्वयवाद, अंतर्राष्ट्रीयता की भावना, मानवतावाद, अद्वैतवाद और सर्वात्मवाद का वर्णन छायावादी काव्य की एक पहचान बनकर उभरती है। छायावादी काव्य की चेतना व्यक्तिनिष्ठ और सूक्ष्म होते हुए भी मूर्त उपादानो द्वारा अभिव्यंजित की गई है। काव्यरूपों की दृष्टि से छायावादी काव्य अत्यंत समृद्ध है। उसमें भावावेशों आकुल व्यंजना, लाक्षणिक वैचित्र्य, मूर्ति प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता, विरोध चमत्कार, कोमल पद विन्यास इत्यादि का समाहार है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को एक जीवंत सत्ता के रूप में माना है। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा के विचार दृष्टव्य हैं- ''छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिये जो प्राचीन काल से बिंब-प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य की प्रकृति अपने दुख में उदात्त और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट, कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई अतः अब मनुष्य के अश्रु, मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिंदुओं का एक ही कारण एक ही मूल्य है।''[1]

ऐसा बिंब विधान छायावाद के प्रमुख सभी कवियों प्रसाद, पंत, निराला तथा महादेवी के काव्य में सहज प्रस्फुटित दिखाई पड़ता है। छायावादी काव्य में सौंदर्य और प्रेम के कई चित्र छिटके हुए हैं। इसमें नारी-सौंदर्य एवं प्रेम की भावाभिव्यंजना, प्रकृति के सौंदर्य की अनुपम-अलौकिक छवि, प्रकृति पर चेतना का आरोप (मानवीकरण) आदि कई रंगों का इंद्रधनुष उन विंबो को चित्राकार देता है। बिम्ब छायावाद की पहचान कराने वाला तत्व है। कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा होती है। बिम्बग्राहिता इसी का परिणाम है। डॉ. नीतू परिहार ने अपनी पुस्तक में लिखा है : ''जहाँ तक बिंब का सवाल है कवि अपनी अनुभूति की मानसी साक्षात्कारात्मिका प्रतीति कराने के लिए बिंब के कौशल का प्रयोग करता है।''[2]

अतः स्पष्ट है की कवि अपनी अनुभूति का मानसी साक्षात्कार कराने के लिए बिंब की रचना करता है जिससे कवि और पाठक की संवेदना एकाकार हो जाए। 'कामायनी' के प्रथम सर्ग की प्रथम पंक्ति के साथ ही प्रसाद जी एक शब्द बिंब की रचना करते हैं -

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।[3]

प्रसाद जी प्रलय की उमड़ती लहरों से त्रस्त, व्यथित, उदास मनु की मनःस्थिति का ऐसा शब्द बिम्ब प्रस्तुत करते हैं की पाठक स्वतःही मनु से एकाकार हो जाता है। इसी प्रकार निराला ने राम की मनःस्थिति के ऐसे बिंब प्रस्तुत किए हैं कि पाठक के मानस पटल पर एक एक शब्द के साथ एक-एक बिंब उभरता है। डॉ. प्रभारानी गुप्ता ने अपनी पुस्तक में लिखा है- ''बिंब साहित्य में जहां एक और भावों के उदबोधक होते हैं , वहाँ दूसरी और उत्कृष्ट कला विधान के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। काव्यानंद सूक्ष्म तत्व है। साहित्य में सूक्ष्म, स्थूल द्वारा रुपायित किया जाता रहा है। काव्य -रस, भाव आदि जो कि सूक्ष्म अरूप और अमूर्त होते हैं, उनकी स्थूल और मूर्त अभिव्यक्ति साहित्य में बिम्ब के द्वारा होती है। इस प्रकार बिंब भाव और रस को व्यंजित करके उन्हें मूर्त रूप प्रदान करता है। वस्तुतः बिंब और भाव अन्योन्याश्रित हैं , बिम्ब भावों की अभिव्यंजना करता है और भाव, बिंब रूप में रुपायित होकर आस्वादनीय बनते हैं।''[4] छायावादी कवियों ने प्रकृति को मूर्त रूप देकर भावों के ऐसे शब्द बिंब रचे हैं जिसमें मुग्ध होकर पाठक उन सभी दृश्यों का मानसी साक्षात्कार कर लेता है। प्रसाद का एक उदाहरण दृष्टव्य है :

बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही
तारा घट उषा नागरी ![5]

अम्बर रूपी पनघट में तारागण रूपी घड़ों को डुबोती हुई प्रातः कालीन उषा सुंदरी का बिंब पाठकों को प्रातः कालीन बेला का मानसी साक्षात्कार कराता है। निराला की 'जूही की कली' तथा 'संध्या सुंदरी' कविता के बिंब प्रकृति के सौंदर्य में नारी सौंदर्य की अनुपम सृष्टि का निर्माण करते हैं, पाठक उससे मानसी साक्षात्कार भी करता है। संध्या में सुंदरी का बिम्ब और शाम की लालिमा में उसका धीरे-धीरे मेघमय आसमान से उतरते हुए आना साक्षात दृश्य बिम्ब उपस्थित करता है :

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी परी-सी
धीरे- धीरे- धीरे ![6]

आकाश से उतरती परी सी संध्या सुंदरी का गत्यात्मक बिंब कवि ने प्रस्तुत किया है। धीरे-धीरे-धीरे से उसकी मंद-मंथर गति के सौंदर्य का चित्रण हुआ है। महादेवी वर्मा भी वसंत-रजनी का आवाहन करती हैं :

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ वसंत रजनी !
तारकमय नव वेणी बंधन
शीश-फूल कर शशि का नूतन,

नव सृजन / ISSN : 2347-8012 / Peer Reviewed Research Journal

रश्मि-वलय सित धन-अवगुंठन,
मुक्ताहल अभिराम बिछा दे
चितवन से अपनी।
पुलकती आ वसंत- रजनी! [7]

बसंत-रजनी पर नायिका का बिंब जो अपनी वाणी में तारों का बंधन बांधती है, चंद्रमा का शीशफूल लगाकर, चंद्रिका की साड़ी पहनकर क्षितिज से धीरे-धीरे मंथर गति से आते हुए धरती पर अपनी चितवन से सुंदर मोती बिछाती आती है।

पल्लव की भूमिका में पंत जी लिखते हैं कि कविता के लिए चित्र भाषा की आवश्यकता पड़ती है, उसके शब्द सस्वर होने चाहिए जो बोलते हो। पंत जी गंगा को सैकत शय्या पर श्लथ, श्रांत और क्लांत तापसी वाला के रूप में चित्रित करते हैं :

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी हैं श्रांत, क्लांत, निश्चल, तापस बाला गंगा निर्मल। [8]

डॉ. प्रभारानी गुप्ता के शब्दों में- ''बिंब कवि के मन के सुप्त भावों को तीव्रता प्रदान कर मुखर बना देता है। कवि के मन में जब भावनाओं का एक साकार बिंब बन जाता है तो वह अभिव्यक्ति तक अमूर्त ही रहता है, किंतु अनाभिव्यक्त बिंब कि यह अमूर्तता, भावों को तीव्रता प्रदान कर मूर्त बिंब के रूप में प्रतिफलित हो उठती है। इस प्रकार कवि के मन से पाठक के ह्रदय तक अनुभूतियों को संक्रांत करने का महत्वपूर्ण कार्य बिंब ही संपन्न करता है, अन्य कला विधान नहीं।''[9]

अनुभूति की यह तीव्रता निराला की कविताओं में ज्यादा स्पष्ट और मुखर होती है। एक विधवा स्त्री के लिए 'इष्ट देव के मंदिर की पूजा' का बिम्ब निराला जैसा व्यक्तित्व ही साकार कर सकता है :

वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शांत, भाव में लीन
वह क्रूर-काल-तांडव की स्मृति-रेखा-सी
वह टूटे तरू की छुटी-लता-सी दीन
दलित भारत की विधवा है। [10]

महादेवी वर्मा के मनरूपी मंदिर में भी प्राणों का दीप शांत, अकेला जलता है। 'मंदिर का दीप' कविता में इन बिम्बों को कवयित्री ने मुखर किया है :

यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो
रजत शंख घड़ियाल स्वर्ण वंशी-वीणा-स्वर,
गये आरती वेला को शत-शत लय से भर,

जब था कल कंठो का मेला,
विहसे उपल तिमिर था खेला,
अब मंदिर में इष्ट अकेला,
इसे अजिर का शून्य गलाने को गलने दो। [11]

आधुनिक कवि पुस्तक में लिखा है- "महादेवी की कविता अपार्थिव चेतना के गिरि से फूटी आध्यात्मिक वेदना की मन्दाकिनी है जो सहस्त्र-सहस्त्र अलौकिक भावनाओं की लहरियों को अपनी करुणा-क्रोड़ में खिलाती हुई परम शांति के महासमुद्र की और निरंतर प्रवाहित हो रही है।"[12]

पंत काव्य भाषा में बिंब के पक्षधर हैं, यही पाठक को मानसी साक्षात्कार कराता है। नैनीताल की नैनी झील के तट पर खड़े हरितकाय पर्वत में किसी महाकार पुरुष का बिंब तथा नीचे झील में दर्पण का बिम्ब कवि के कल्पना सौंदर्य का पाठकों को मानसिक साक्षात्कार कराता है :

मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र दृग सुमन फाड़
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार
जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल। [13]

पंत की रचनाओं में बिंब और भावों का यह संबंध अत्यंत प्रगाढ़ दिखाई पड़ता है। प्रकृति का श्रृंगार उन्होंने अपने शैशव की जिज्ञासा भरी आंखों से देखा था।वह एक शिशु के समान चकित भाव से प्रकृति से प्रश्न करता है। बिम्ब ही कवि का मूल प्रतिपाद्य है। कविता और बिंब का यह चिर-साहचर्य अटूट है। एक अन्य दृश्य बिंब में-

सघन मेंघों का भीमाकाश,
गरजता है जब तमसाकार,
दीर्घ भरता समीर निःश्वास
प्रखर झरती जब पावस-धार,
न जाने, तपका तडित में कौन
मुझे इंगित करता तब मौन। [14]

इसमें तपक तड़ित प्रयोग में त के आवर्तन से विद्युत की क्षणिक चमक का बिंब मानस में उभरता है।

डॉ. प्रभारानी गुप्ता के शब्दों में- "बिंब द्वारा कवि अपनी अनुभूति को रुपायित करता है। कवि के भाव प्रवण मन पर जो बाकी अनुभवों का स्थायी प्रभाव होता है, उन्हें वह

निजी अनुभूतियों से सम्बद्ध कर पुनः बिंब रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार बिंब, भावों का उद्‌बोधन ही नहीं करता वरन कवि के निजी भाव जगत (राग, द्वेष, हर्ष, विषाद, उल्लास) आदि से भी परिचय करवाता है और उनके व्यक्तित्व को भी रूपायित करता है। जिससे कि बिम्बों का प्रत्यक्षीकरण सरल हो जाता है। इस दृष्टि से बिम्ब काव्य के लिए ही नहीं, पाठकों के लिए भी विशेष महत्वपूर्ण हो उठते हैं।"[15]

कामायनी के श्रद्धा सर्ग में श्रद्धा जब प्रथम बार मनु को देखती है तो उसके मन में जो बिम्ब उठता है कभी उन भावों तक पाठकों को भी पहुंचाता है :

कौन तुम संसृति-जलनिधि तीर
तरंगों से फेंकी मणि एक ,
कर रहे निर्जन का चुपचाप
प्रभा की धारा से अभिषेक? [16]

मणि के बिंब से ही पाठक श्रद्धा के सात्विक मनोभावों को पहचान जाते हैं। प्रसाद ने प्रकृति पुरुष और नारी सौंदर्य के कई चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने सौंदर्य के ऐसे कोमल प्रतिमान रखे हैं कि सहृदय पाठक को उसका मानसी साक्षात्कार हो जाता है। श्रद्धा का सौंदर्य दृष्टव्य है :

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-बन बीच गुलाबी रंग। [17]

नीले परिधान में श्रद्धा के सौंदर्य को प्रसाद ने 'बिजली के फूल' की व्यंजना दी है। इससे पाठकों में बिजली के फूल से श्रद्धा के शरीर की उष्मा, कांति, गुलाबी वर्ण और कोमलता का बिंब उभरता है। प्रसाद जी की सौंदर्य चेतना अत्यंत कोमल, जड़ में भी स्फूर्ति उत्पन्न करने वाली है।

निराला की कविता में भी छायावादी कविता का सौंदर्य विद्यमान है। निराला की राम की शक्ति पूजा में यह बिम्ब भाव प्रवणता की मुखरता और तीव्रता लिए हुए व्यंजित होते हैं। राम जब शक्ति की आराधना का संकल्प लेते हैं और अपने सभी सभासदों को शक्ति की काल्पनिक मूर्ति का जो बिम्ब प्रस्तुत करते हैं वह अलौकिक बिंब उस विराट सत्ता का मुखर दृश्य पाठकों के मानस में अंकित करते हैं :

देखो, बंधुवर, सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुंदर,
पार्वती कल्पना है इसकी, मकरंद-बिंदु,
गरजता चरण-प्रांत पर सिंह वह, नहीं सिंधु,

दशदिक्-समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अंबर में हुए दिगंबर अर्चित शशि शेखर,
लख महाभाव-मंगल पदतल धँस रहा गर्व
मानव के मन का असुर मन्द, हो रहा करो खर्व। [18]

सिंहवाहिनी माँ जगदंबा के विराट स्वरूप को विराट प्रकृति स्वरूपा बिम्ब के माध्यम से जो विराट कल्पना कवि ने साकार की है, वह अद्‌भुत है, मौलिक है- सैकड़ों हरे-भरे कुंजो से शोभित श्यामल सुंदर पर्वत मां पार्वती का बिम्ब है। पर्वत के चरण प्रांत में गरजने वाला सागर माँ पार्वती का सिंह है, दसों दिशाएँ उनके दस हाथ हैं और ऊपर आकाश में दिगंबर विषधारी व अपने मस्तक पर चंद्रमा धारण करने वाले शिव विराजमान हैं। राम की शक्ति पूजा में निराला ने प्रकृति का विराट बिम्ब कई स्थानों पर चित्रित किया है।

नामवर सिंह अपनी पुस्तक 'छायावाद' में लिखते हैं : ''वस्तुतः प्रकृति ने जिस दिव्य रूप में आधुनिक मानव को दर्शन दिया था, उसकी विराटता के सामने कवि की यह श्रद्धा स्वाभाविक है। इसीलिए कुछ कवियों ने 'विश्व सुंदरी प्रकृति पर चेतनता का आरोप' करके उसे विश्वप्रिया शक्ति का रूप दे दिया और कुछ ने 'प्रकृति की अनेकरूपता में, परिवर्तनशील विभिन्नता में तारतम्य खोजने' के फलस्वरूप उसके 'कारण पर मधुरतम व्यक्तित्व का आरोपण' करके अपनी प्रिया बना लिया। पहली प्रवृति प्रसाद की है और दूसरी महादेवी की।''19

मूर्त पर अमूर्त का आरोपण छायावादी काव्य की उपलब्धि है। महादेवी के काव्य में भी वह अलौकिक विराट सत्ता प्रकृति के बिम्बों से आभासित होती है। उस सत्ता के विरह का, वेदना का स्वर बिम्ब उनकी प्रत्येक कविता में अभिव्यक्त होता है-

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात!
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास,
अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात। [20]

जीवन पर विरहरूपी जलजात का बिम्ब अनुभूतिगम्य है। बिंब काव्य का अपरिहार्य तत्व है। बिम्ब समस्त कविताओं का मौलिक विषय है और प्रत्येक कविता स्वयं एक बिम्ब है। कविता अपने आप में एक-एक अनुभूतिमय क्षण की बिम्बात्मक अभिव्यक्ति है।

अतः निष्कर्ष रूप में डॉ. नगेन्द्र के ही शब्दों में अपनी बात समाप्त करती हूँ- ''जिस प्रकार द्विवेदीयुगीन कविता में सृष्टि की व्यापकता और अनेकरूपता को समेटने का प्रयास है उसी प्रकार छायावादी काव्य में मनोजगत की गहराई को वाणी में संजोने का प्रयत्न किया गया है। मनोजगत का सत्य सूक्ष्म होता है जिसे सर्जना द्वारा साकार करने के लिए छायावादी कवियों ने उर्वरा कल्पना-शक्ति का उपयोग किया है। कल्पना का उपयोग अनुभूति के विविध पक्षों और प्रसंगों की उद्‌भावना में भी किया गया है और उन्हें व्यक्त करने वाले प्रतीकों तथा

बिम्बों की सर्जना में भी। इसीलिए छायावादी अभिव्यंजना-पद्धति विशिष्ट और सांकेतिक हो गयी है।''[21]

संदर्भ ग्रंथ

1. शिवकुमार शर्मा : *हिंदी साहित्य : युग और प्रवृतियाँ* , पृ, 451
2. नीतू परिहार : *समकालीन हिंदी कविता का काव्यशास्त्र,* संघी प्रकाशन,जयपुर, 2005, पृ : 191
3. जयशंकर प्रसाद : *कामायनी* , पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999 पृ : 13
4. प्रभारानी गुप्ता : *निराला' साहित्य में प्रतीक और बिम्ब,* संघी प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृ : 2
5. जयशंकर प्रसाद : *कामायनी,* पृ : 48
6. *निराला रचनावली (1)* सं : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, 2009 पृ : 77
7. *महादेवी वर्मा संचयिता,* सं : निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, द्वितीय सं : 2008 पृ : 45
8. सत्येन्द्र पारीक (सं.) : *आधुनिक काव्य सोपान,* पुनीत प्रकाशन, जयपुर, 2016, पृ : 55
9. प्रभारानी गुप्ता : *'निराला' साहित्य में प्रतीक और बिम्ब* , पृ : 3
10. *निराला रचनावली (1)* सं : नंदकिशोर नवल, पृ : 72
11. *महादेवी वर्मा संचयिता,* सं : निर्मला जैन, पृ :94
12. रामकिशोर शर्मा : *आधुनिक कवि : विश्वंभर 'मानव',* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं : 2008, पृ : 132
13. सत्येन्द्र पारीक (सं.) : *आधुनिक काव्य सोपान,* पृ : 52
14. वही पृ : 53
15. प्रभारानी गुप्ता : *'निराला' साहित्य में प्रतीक और बिम्ब* , पृ : 2-3
16. जयशंकर प्रसाद : *कामायनी,* पृ : 26
17. वही पृ : 26
18. *निराला रचनावली (1)* सं : नंदकिशोर नवल, पृ : 336
19. नामवर सिंह : *छायावाद* , राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली छठा सं : 2004, पृ : 41
20. *महादेवी वर्मा संचयिता,* सं : निर्मला जैन, पृ : 51
21. नगेन्द्र एवं हरदयाल : *हिंदी साहित्य का इतिहास,* मयूर पैपरबेक्स, नोएडा, 28 वाँ सं., 2001, पृ : 54

• • •

सुमित्रानंदन पंत

जन्म: 20 मई, 1900 | मृत्यु : 28 दिसम्बर, 1977